सं. को.वि./सोनीपत/82-84/36661.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुन्डली सोनीपत के श्रमिक श्री दीना नाथ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विश्वाद है;

शोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीबोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए ग्रो. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री दीना नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. भो.वि./सोनीपत/81-84/36668.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रबड़ प्रा. लि., कुन्डली सोनीपत के श्रमिक श्री राम नरेश तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिध्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.श्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगतया उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:

क्या श्री राम नरेश की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./सोनीपत/80-84/36675.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा. लि., कृन्डली → सोनीपत के श्रीमक श्री चन्द्र पाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ब्रोह्मोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.ओ. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उनत अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेंतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री चन्द्रपाल की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./सोनीपत/79-84/36682.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुंडली, सोनीपत के श्रमिक श्री धकवर खान तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

. भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, भौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचन सं. 3864-ए.श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की.

घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

न्याश्री अकबर खान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. स्रो. वि/सोनो नत् 89-84 36689 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रखद प्रा. लि., कुल्ड जी, सोनो नत के श्रमिक शो राम बुज़ार तथा उसके प्रबन्ध कों के बोब इसनें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपात विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, ग्रब, भीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्यनाल इस के द्वारा सरकारों अधिसूचना से. 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864—ए. श्रो. (ई)-श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम को घारा 7 के अधीन गठित श्रव न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उत्तसें सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :——

क्या श्री राम वुलार को सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं शो वि | सोनीपत | 88-84 | 36696. —चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सिगमा रहड़ प्राण्डित, कुन्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री हरी नाम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले क सम्बन्ध में कोई श्री छोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना नांछनीय समझते हैं;

इ सिलए, प्रव, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तिओं का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 की साथ गठित सरकारी प्रधिसूचना सं० 3864-ए०बो० (ई)-श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहाक, को विवादग्रस्त या उससे मुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या श्री हरी नाम की सेवाओं को समापन न्यायोजित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. खो. वि./सोनीपत/90-84/36703.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुंडली, सोनीपत के श्री नन्द लाल तथा उसके प्रवन्कों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई खौद्योगिक विवाद है,

भ्रोर चूंकि राज्यपाल, हरियाणा, विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 964 1-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए० औ० (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 हारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:---

क्या श्री नन्द लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं शो वि । सोनीपत/91-84/36710. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि सिगमा रवड़ प्राव् लिव, कुन्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री वसंत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

्य भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, आधारिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं0 9641-1-अप-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं0 3864-ए श्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतंक को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय हेलु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादपस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या श्री बसंत की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. घो.वि./सोनीपत/ 9 2-84/36717---चृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुण्डली सोनीपत, के श्रमिक श्री जिया लाल तथा उसके प्रबन्धकों केबीच इसमें इसकेबाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन णय हेतृ निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947; की धरा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा - राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिस्चना सं. 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिस्चना सं. 3864—ए ओ. (ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री जिया लाल की सेवाग्रों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं म्रो.बि./सोतीपत/93-84/36724---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुण्डली सोनीपत, के श्रमिक श्री राजेन्द्र-II तथा उसके प्रवन्धकों के वीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क्षितियों का प्रयोग करते हुये हुरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3864-ए श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेत् निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राजेन्द्र $-\Pi$ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है? '

स. म्रो. वि/सोनोपर्/94-84/36731.—चूंकि हरियाणः के राज्यपालं की राय है कि मैं. सिगमा रबड़ प्रा. लि., कुण्डली सोनीपत, के श्रमिक श्री राम बचन तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1 श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए एस.श्रो.(ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्ध कों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री राम बचन की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?